जो लोग मेरे पोस्ट पढ़ते हो वो इस बात पर जरूर ध्यान दें कि भगवान से प्यार अति आवश्यक है। यदि प्यार नही है, उनका रूपध्यान नही है, उनके लिए आँसु नही आते है तो सब साधन निरर्थक है। बिना रोये प्रेम पियारो मीत किसको मिला है? श्री महाराज जी कहते है,"आँसुओं के बिना कीर्तन, कीर्तन नही है। तोता रटंत है वो।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

तुलसीदास जी ने कहा है,"मिलई ना रघुपती बिनु अनुरागा"। प्यार के कई तरीके हो सकते है। वो आप पर निर्भर है।

श्रीकृष्ण, श्रीराधा का जो रूप आपको पसंद हो उस रूप में आप उनको मान सकते हो। जो कोई लडका, लडकी, हिरो, हिरॉईन का रूप आपके मन को भाता हो, वो रूप आप श्रीकृष्ण, श्रीराधा को दे सकते हो। लेकिन याद रहे कि उन व्यक्तिओं को आप भगवान नही मान रहे हो। श्रीकृष्ण, श्रीराधा उन व्यक्तिओं से अलग है। आप उन व्यक्तिओं से प्यार नही कर रहे हो। आप उस रूप वाले श्रीकृष्ण, श्रीराधा से प्यार कर रहे हो। उनको पुकार रहे हो।

अब उस रूप वाले भगवान को मन से सोचो। उनसे प्यार बढ़ाओ। संसारी प्यार की तरह मिलन की सोचो। कभी सोचो कि वो हमसे दूर है। प्यार जैसे जैसे बढ़ेगा वैसे वैसे मिलन की प्यास बढ़ेगी। मन की व्याकुलता बढ़ेगी। आँसु आएंगे। प्रेम एक दिन रंग लाएगा।

मन को जो ड्रेस पसंद हो वो उनको पहनाओ। जीन्स पहनाओ। टी शर्ट पहनाओ। कोट टाय पहनाओ। जरा

संकोच ना करो। उनको मनपसंद खाना खिलाओ। आज कल ड्रेस पहनाने के लिए ॲप आते है। उसका इस्तेमाल करके उनको हररोज नये नये ड्रेस पहेना सकते हो। वर्चुअल चाय, कॉफी, नाश्ता, खाना बनाकर उनको खिला पिला सकते हो। वर्चुअल पूजा, आरती, दर्शन इत्यादि कर सकते हो। ये सब रूपध्यान सहित होना चाहिए। भगवान सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी है। भगवान का स्मरण चाहे जिस प्रकार से हो - भागवत कहती है, जिस किसी प्रकार से आपका मन भगवान में लगे वही भक्ति है। तरीका आप पर निर्भर करता है। मानसिक उपासना ही भगवान को मिलाती है। भगवान बाहरी क्रिया नोट ही नही करते है। मन का भाव देखते है।

बाकी चाहे आप कितने ही ग्रंथ पढ़ो, पूजा, जप, तप, व्रत, कीर्तन करो, भगवत् विषयक ग्रुप में पोस्ट लिखो उससे काम नही बनेगा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है - बंधन एवं मोक्ष का कारण केवल मन है। अतएव मन की साधना ही साधना है। केवल इंद्रियों की साधना से मन शुद्ध नही होगा।

मैंने मेरी वेब साईट पर स्पष्ट लिखा है कि मेरे बहुत से पोस्टस् जगद्गुरूत्तम श्री कृपालुजी महाराज जी की फिलॉसॉफि पर आधारित है। उनका पूरा जीवन ही लोक कल्याण के लिए समर्पित था। उनकी मंगल कामना संपूर्ण विश्व के लिए थी। उसी मंगल कामना के साथ ये पोस्टस् मैं लिख रहा हूँ। राधे राधे।